✺ 13 अक्तुबर 2014 की मुरली से मुख्य पॉईन्टस् ✺

✺ ज्ञान-

1] श्रीमत पर चलने से ही श्रेष्ठ देवता बनेंगे। देवताओं की सारी राजधानी स्थापन हो रही है। तुम यहाँ बैठे अपना देवी-देवताओं का राज्य स्थापन करते हो।

2] तुम आत्मा परमधाम में रहने वाली हो। फिर यहाँ शरीर लेकर पार्ट बजाती हो। आत्मा यहाँ दु:ख और सुख का पार्ट बजाती है।

3] ज्ञान देने वाला तो एक के सिवाए दूसरा कोई है नहीं। ज्ञान से ही सद्गति होती है। सद्गति दाता एक ही बाप है। शिवबाबा का कोई श्री श्री नहीं कहते, उनको टाइटिल की दरकार नहीं। यह तो बड़ाई करते हैं, उनको कहते ही हैं 'शिवबाबा'। तुम बुलाते हो शिवबाबा हम पतित बन गये हैं, हमको आकर पावन बनाओ।

4] तुम हो नई दुनिया स्वर्ग बनाने वाले। तुम बहुत अच्छे कारीगर हो। अपने लिए स्वर्ग बना रहे हो। कितने बड़े अच्छे कारीगर हो, याद की यात्रा से नई दुनिया स्वर्ग बनाते हो। थोड़ा भी याद करो तो स्वर्ग में आ जायेंगे। तुम गुप्त वेष में अपना स्वर्ग बना रहे हो।

✺ योग-

1] हम बच्चे ऐसी कारीगरी करते हैं जो सारी दुनिया ही नई बन जाती है, उसके लिए हम कोई ईट या तगारी आदि नहीं उठाते हैं लेकिन याद की यात्रा से नई दुनिया बना देते हैं। हमें खुशी है कि हम नई दुनिया की कारीगरी कर रहे हैं। हम ही फिर ऐसे स्वर्ग के मालिक बनेंगे।

2] मूल बात बाप कहते हैं– मुझे याद करो और सुखधाम को याद करो। बाप को याद करने से पाप कट जायेंगे और फिर स्वर्ग में आ जायेंगे। अब जितना जो याद करेंगे उतना पाप कटेंगे।

3] यह रावण की राजधानी खलास हो जानी है। जो अन्दर में कितनी खुशी होनी चाहिए। हमने यह स्वर्ग तो अनेक बार बनाया है, राजाई ली फिर गँवाई है। यह भी याद करो तो बहुत अच्छा। हम स्वर्ग के मालिक थे, बाप ने हमको ऐसा बनाया था। बाप को याद करो तो तुम्हारे पाप भस्म होंगे। कितना सहज रीति तुम स्वर्ग की स्थापना कर रहे हो।

✺ धारणा-

1] उन्हों के लिए मुख्य बात है अपने को आत्मा समझ शिवबाबा को याद करना है। हम शिवबाबा के बच्चे हैं, हमको बाबा स्वर्ग का वर्सा देंगे।

2] उनके लिए तो एक अक्षर ही काफी है– अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो।

3] जानते हो हम इस शरीर को छोड़ फिर जाकर स्वर्ग में निवास करेंगे तो ऐसे बेहद के बाप को भूलना नहीं चाहिए। अभी तुम स्वर्ग में जाने के लिए पढ़ रहे हो। अपनी राजधानी स्थापन करने के लिए पुरूषार्थ कर रहे हो।

4] दुनियावी बातों में समय नहीं गँवाना चाहिए। बाप को याद करो, स्वदर्शन चक्रधारी बनो। यहाँ बच्चों को अच्छी रीति सुनकर फिर बहुत उगारना है, सिमरण करना है, बाबा ने क्या सुनाया। शिवबाबा और वर्से को तो जरूर याद करना चाहिए। बाप हथेली पर बहिश्त ले आये हैं, पवित्र भी बनना है। पवित्र नहीं बनेंगे तो सज़ा खानी पड़ेगी। पद भी बहुत छोटा पा लेंगे। स्वर्ग में ऊंच पद पाना है तो अच्छी रीति धारणा करो। बाप रास्ता तो बहुत सहज बताते हैं।

...2

5] ज्ञान सुनने और सुनाने के साथ-साथ ज्ञान स्वरूप बनो। ज्ञान स्वरूप अर्थात् जिनका हर संकल्प, बोल और कर्म समर्थ हो, व्यर्थ समाप्त हो जाए। जहाँ समर्थ है वहाँ व्यर्थ नहीं नहीं हो सकता। जैसे प्रकाश और अन्धियारा साथ-साथ नहीं होता। तो ज्ञान प्रकाश है, व्यर्थ अंधकार है इसलिए ज्ञानी तू आत्मा माना हर संकल्प रूपी बीज समर्थ हो। जिनके संकल्प समर्थ हैं उनकी वाणी, कर्म, सम्बन्ध सहज ही समर्थ हो जाता है।

6] सूर्यवंश में जाना है तो योगी बनो, योद्धे नहीं।

✺ सेवा-

1] बुढ़ियायें तो हिरी हुई है, सतसंगो में जाकर कथा सुनती हैं। उन्हों को फिर घड़ी-घड़ी बाप की याद दिलानी है। स्कूल में तो पढ़ाई होती, कथा नहीं सुनी जाती। भक्तिमार्ग में तो तुमने ढेर कथायें सुनी हैं परन्तु उनसे कुछ भी फायदा नहीं होता है। छी-छी दुनिया से नई दुनिया में तो जा न सकें। मनुष्य न तो रचयिता बाप को, न रचना को जानते हैं। नेती-नेती कह देते हैं।

2] तो इन बच्चियों को कुछ तो शिवबाबा की याद दिलाते रहो। शिवबाबा का नाम याद है? थोड़ा बहुत सुनती हैं तो स्वर्ग में आयेंगी। यह फल जरूर मिलना है। बाकी पद तो है पढ़ाई से। उसमें बुहत फर्क पड़ जाता है। ऊंच ते ऊंच फिर कम से कम, रात-दिन का फर्क पड़ जाता है।

3] अब बाप आये हैं तुमको श्रेष्ठ मत देने, श्रेष्ठ स्वर्ग की स्थापना करने। अनेक बार तुमने यह स्थापना की है तो बुद्धि में याद रखना चाहिए। अनेक बार तुमने यह स्थापना की है तो बुद्धि में याद रखना चाहिए। अनेक बार राज्य लिया फिर गँवाया है। यह बुद्धि में चलता रहे, और एक-दो को भी यह बातें सुनाओ।